नामजप-उपचारसे दूर होनेवाले विकार

(नामजपकी सूचनाओंसहित मुद्रा एवं न्यास भी अन्तर्भूत)

भूमिका

ग्रन्थके इस भागमें कुछ देवताओंके नामजप किन विकारोंमें उपयुक्त हैं, यह एक ही दृष्टिक्षेपमें समझ पानेके लिए सूचीके रूपमें दिए हैं । इसका मुख्य कारण है – प्रत्येककी अपने उपास्यदेवताके प्रति अथवा ॐ समान उपासना-जपके प्रति दृढ श्रद्धा होती है । विकार-निर्मूलन हेतु अपने उपास्यदेवताका नामजप अथवा उपासना-जप करना हो, तो अधिक श्रद्धापूर्वक किया जाता है, इसलिए उससे विकार शीघ्र दूर होनेमें सहायता मिलती है ।

मनुष्यकी देहमें पंचतत्त्वोंमेंसे कोई तत्त्व असन्तुलित होनेपर देहमें विकार उत्पन्न होते हैं । यह असन्तुलन दूर करने हेतु अर्थात उससे उत्पन्न विकार दूर करने हेतु उस तत्त्वसे सम्बन्धित नामजपके साथ ही मुद्रा और न्यास भी उपयुक्त हैं । नामजपसहित मुद्रा और न्यास करनेसे उपचारोंका लाभ अधिक होता है । इस विषयमें भी विवेचन किया गया है ।

'नामजपके उपचार कर अधिकाधिक रोगी शीघ्रातिशीघ्र विकारमुक्त हों', यह श्री गुरुचरणोंमें और विश्वपालक श्री नारायणके चरणोंमें प्रार्थना है ! – **संकलनकर्ता**

आपातकालमें वैद्य, औषधि की अनुपलब्धतामें उपयुक्त सनातनके ग्रन्थ !

- मनोविकारोंके लिए स्वसम्मोहन उपचार (२ भाग)
- शारीरिक विकारोंके लिए स्वसम्मोहन उपचार
- यौन समस्याओंके लिए स्वसम्मोहन उपचार

अनुक्रमणिका

[कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण सूत्र (मुद्दे) '*' चिन्हसे दर्शाए हैं ।]

१. कुछ नामजपोंसे दूर हो सकनेवाले विकार ११

१ अ. कुछ सामान्य सूचनाएं ११

१ आ. देवताओंके नामजप ११

१ आ १. श्री गणपति १ आ २. श्रीविष्णु ११

* मनुष्यकी देहके अवयवोंके विकारोंके लिए उपयुक्त श्रीविष्णुके विशिष्ट नामोंका जप १४

१ आ ३. श्रीराम १ आ ४. श्रीकृष्ण १४

१ आ ५. श्री विठ्ठल १ आ ६. हनुमान १६

१ आ ७. शिव १ आ ८. देवी १८

* श्री दुर्गादेवी * श्री पार्वतीदेवी १९

* श्री कालीदेवी * श्री सरस्वतीदेवी २०

* विविध अवयवोंके विकारोंके लिए 'देवीकवच' के कुछ श्लोकोंमें दिए देवियोंका नामजप २१

१ आ ९. दत्त १ आ १०. कुलदेवता २२

१ आ ११. ग्रहदेवता एवं ग्रहोंसे सम्बन्धित देवता २४

१ आ १२. श्री ब्रह्मदेव १ आ १३. श्री प्रजापति २९

१ आ १४. श्री इन्द्रदेव १ आ १५. श्री कामदेव २९

१ आ १६. श्री धन्वन्तरि १ आ १७. श्री अश्विनीकुमार २९

१ आ १८. श्री यमदेव १ आ १९. दिग्देवता ३०

१ इ. पंचतत्त्वोंके (पंचमहाभूतोंके) नामजप ३०

१ ई. शब्दब्रह्म (गायत्री मन्त्रके शब्दोंका जप) ३१

१ उ. बीजमन्त्र ३४

१ उ १. पंचतत्त्वोंसे सम्बन्धित बीजमन्त्र ३४

* टं (पृथ्वीतत्त्व) * लं (पृथ्वीतत्त्व) ३४

* वं (आपतत्त्व) * रं (तेजतत्त्व) ३५

* यं (वायुतत्त्व) * खं (आकाशतत्त्व) ३७

* हं (आकाशतत्त्व) ३८

१ उ २. सबसे बडा बीजमन्त्र – ॐ ३९

२. नामजप करते समय की जानेवाली मुद्राएं और न्यास, तथा न्यासस्थानकी जानकारी ४१

३. उपचारोंके लिए मुद्रा, न्यास तथा न्यासस्थान समझकर उपचार करनेकी अपेक्षा, स्वयं खोजकर उपचार करना अधिक श्रेष्ठ ! ५०

३ अ. न्यास करनेका स्थान (न्यासस्थान) खोजना ५१

३ आ. मुद्रा खोजनेकी पद्धति ५३

३ इ. मुद्रानुसार नामजप कौनसा करें ? ५४

४. नामजपके उपचार करने सम्बन्धी सूचनाएं ५५

४ अ. नामजपसे उपचार करनेवाले यह ध्यान रखें ! ५५

४ आ. नामजप उपचार किस समय करें ? ५६

४ इ. प्रत्यक्ष उपचार करते समय ध्यान देनेयोग्य कुछ सूत्र ५६

४ ई. विकार-निर्मूलनके लिए जप प्रतिदिन कितना समय करें ? ७०

४ उ. विकार-निर्मूलन हेतु नामजप कितने दिन करें ? ७०

४ ऊ. जप करनेमें असमर्थ व्यक्तिके लिए अन्य लोग क्या करें ? ७२

४ ए. नामजप उपचार करते समय आयुर्वेदीय उपचार जारी रखें ! ७३

५. नामजपसे विकार-निर्मूलन होनेसम्बन्धी साधकोंकी अनुभूतियां ७६